>

Title: Need to implement the commitment for setting up a Petro-Chemical factory in Barauni, Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति जी, मैं उस तथ्य की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं जब इसी सदन में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने बिहार के प्रथम मुख्य मंत्री डॉ. श्रीकृष्ण के आग्रह पर बरौनी में सार्वजनिक क्षेत्र में भारत का पहला तेलशोधक कारखाना स्थापित करने की घोषणा की थी। वह स्थापित भी हुआ। उनकी घोषण के साथ-साथ यह भी निर्णय हुआ था कि जब तेलशोधक कारखाने चलेंगे, उनके नाफ्था से पेट्रो-केमिकल की 37 यूनिट्स स्थापित होंगी और बरौनी भारत का लंकाशायर बनेगा।

जब इंदिरा जी वहां गई थी, मैं भी उस वक्त था। उन्होंने भी आश्वासन दिया था। राजीव जी गए थे तो उन्होंने भी आश्वासन दिया था। लेकिन बड़ी वेदना के साथ मैं कहना चाहता हूं कि बरौनी तेलशोधक कारखाने की स्थापना के बाद इस देश में जहां भी तेलशोधक कारखाने की स्थापना हुई, पेट्रो-केमिकल यूनिट्स उसके नाफ्था से स्थापित हुई। लेकिन बरौनी तेलशोधक कारखाना बांझ बनकर रह गया। मैं आपके माध्यम से यूपीए सरकार से आग्रह करता हूं कि यह इतिहास की धरोहर है, एक महान आत्मा, एक महान चैतन्य आत्मा की घोषणा है। आज बिहार औद्योगिक पिछड़ेपन का शिकार है। लाखों नौजवान बेरोजगार हैं। जनता की लोकतंत्र में जो आस्था है, उसमें दरार पड़ती जा रही है और आतंकवाद तथा उग्रवाद फैलता जा रहा है।

सभापति जी, बरौनी तेलशोधक कारखाने का विस्तार हुआ। सन् 1980 पी.सी. सेठी जी द्वारा घोषणा की गई और बरौनी में जाकर और पेट्रो-केमिकल यूनिट का शिलान्यास करना भी निर्धारित हुआ। लेकिन उनके पुत्र की बीमारी के कारण वह मुम्बई से नहीं आ सके और वह घोषणा धरी की धरी रह गई। मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता, लेकिन इतिहास ने जो हमें पीड़ा दी है, जो हमारे साथ नाइंसाफी की गई है, हमारी जो अवहेलना हुई है, हम आपके माध्यम से सरकार से मांग करते हैं कि बरौनी तेलशोधक कारखाने के साथ जो उसका नाफ्था है, उससे पेट्रो-केमेकल कारखाना लगाया जाए। जो एरोमैटिक कमेटी है, उसने भी तय किया था कि एरोमैटिक के कारखाने खोले जाने चाहिए।